RESEARCH HUB – International Multidisciplinary Research Journal (RHIMRJ)
Research Paper
Available online at: www.rhimrj.co.in

शीतयुद्धोत्तर काल में भारत अमेरिका संबंधों का बदलता–परिदृश्य

महेन्द्र कुमार पुरोहित

शोधार्थी, व्याख्याता (राजनीति विज्ञान) राजकीय दरबार आचार्य संस्कृत महाविद्यालय, जोधपुर (राज.)

शोध सारांशः– सोवियत संघ में गोर्बाचोव ने **''ग्लास्नोस्त'' और 'पेरेस्त्रोइका'** का एक नया अध्याय शुरू किया। 1990 के दशक के आरम्भ में सोवियत संघ के विघटन और शीत युद्ध के अंत के बाद विश्व व्यवस्था में मौलिक परिर्वतन हुआ। नयी विश्व व्यवस्था में ''संयुक्त राज्य अमेरिका एकमात्र महाशक्ति रह गया है।'' साथ गुट निरपेक्ष आन्दोलन के प्रभाव में भी कमी होना स्वाभाविक था। वैश्वीकरण और उदारीकरण की शुरूआत के पश्चात् सभी मुद्दे गोण हो गये और आर्थिक मुद्धे को प्राथमिकता दी जाने लगी। परिवर्तित वातावरण में अमेरिका ने अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में भारत की भूमिका तथा महत्ता को पहचानना शुरू कर दिया। भारत द्वारा आर्थिक उदारीकरण की नीति अपनाने से भी दोनों देशों के संबंधों में सुधार होने लगा। जहाँ शीत युद्ध काल में दोनों देशों के संबंधों में उत्तार–चढ़ाव होता रहा वही अब सोवियत संघ के विघटन के बाद बीसवीं शताब्दी के अंतिम दशक में भारत–अमेरिका संबंधों में क्या नये गतिरोध आयेंगे या मित्रता के नये चरण स्थापित होगें यही प्रस्तुत अध्याय का विषयवस्तु भी है।

संकेताक्षर– शीतयुद्ध, भारत, अमेरिका, उदारीकरण, वैश्विकरण, ग्लास्नोस्त, पेरेस्त्रोइका।

शोध विस्तारः– 1992 के आम चुनावों के दौरान ही श्री राजीव गांधी की हत्या हो गयी। प्रधानमंत्री नरसिम्हा राव के नेतृत्व में सरकार बनी। उस समय भारत की अर्थव्यवस्था और राजनीतिक व्यवस्था अस्थिरता के दौर से गुजर रही थी। वही अमेरिका में 1992 के राष्ट्रपति चुनावों में डेमोक्रेट राष्ट्रपति **बिल क्लिंटन** की जीत हुयी। पी.वी. नरसिम्हा राव ने आर्थिक सुधारों की प्रक्रिया जोरदार ढंग से लागू करके खुलेपन की नीति अपनाई जिसका मुख्य लक्ष्य विदेशी पूंजी निवेश को बढ़ावा देना था। जिससे भारतीय अर्थव्यवस्था पटरी पर आ सके। जनवरी 1992 में प्रधानमंत्री श्री पी.वी. नरसिम्हा राव ने अमेरिकी यात्रा की और राष्ट्रपति जार्ज बुश से मुलाकात की और अमेरिका के साथ द्विपक्षीय न्यूक्लियर परमाणु मुद्धे पर वार्ता का प्रस्ताव रखा।[1]

अनेक मुद्दे पर शीत युद्ध के समाप्त होने के पश्चात् भारत और अमेरिका शीत युद्ध की मानसिकता से ग्रस्त है। अमेरिका की भारत के संदर्भ में परिसीमन की नीति बरकरार है। यद्यपि किकलिघटर प्रस्तावों द्वारा प्रारम्भ हुए प्रतिरक्षा सहयोग की वजह से दोनों देशों के बीच तीन संयुक्त नौसैनिक अभ्यास मालाबार–1 (1992), मालाबार–2 (1995) तथा मालाबार 3 (1996) सम्पन्न हुये। जिससे दोनों देशों के मध्य सामरिक सहयोग की शुरूआत हुयी। भारत एवं रूस के बीच पुनः सुधरते रिश्तों से अमेरिका चिन्तित था। अमेरिका ने रूस पर दबाव डाला की वह भारत को कायोजैनिक रॉकेट इंजन की सप्लाई न करे। इसके अलावा अमेरिका यह भी कोशिश करता रहा कि किसी तरह भारत एवं रूस के बीच मतभेद उत्पन्न हो।

श्री राव मई 1994 में अमेरिका की यात्रा पर गये, इस दौरान दोनों देश के मध्य आर्थिक सम्बन्धों के साथ–साथ राजनैतिक सम्बन्धों को भी सुधारने का प्रयास किया। दोनों नेताओं के मध्य आपसी सहयोग बढ़ाने, पूंजी निवेश, व्यापार को बढ़ाने जैसे मुद्धों पर सहमति बनी तथा एक संयुक्त विज्ञप्ति जारी की जिसमें कहा गया कि ''अमेरिकी अर्थव्यवस्था दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है।'' भारत के लिए उसका बड़ा महत्व है। अमेरिका भारत का बड़ा साझेदार है, अमेरिका भारत से 20 प्रतिशत निर्यात और 10 प्रतिशत आयात करता है।[2]

इस यात्रा के बाद भारत अमेरिकी संबंधों का तीव्रता से विकास हुआ और उनमें विविधता आयी। 1994–95 के दौरान वाणिज्यिक तथा आर्थिक क्रियाकलाप अमेरिका व भारत सहयोग प्रमुख मुद्दे थे। भारत में निवेश करने वाले देशों में अमेरिका प्रमुख था। उसके द्वारा 1991 से 1994 तक निवेश लगभग 200 मिलियन रूपये तथा द्विपक्षीय व्यापार 2400 करोड़ का हो गया था। लेकिन एन.पी.टी. पर हस्ताक्षर का दोनों में मतभेद बना रहा।

कश्मीर व पंजाब के मुद्धों से सम्बन्धित मानवाधिकार के मामले को लेकर भारत–अमेरिका के मध्य तनाव अवश्य पैदा हुआ। साथ अमेरिका विश्व व्यापार संगठन के सम्मेलन (1996) के पश्चात् भारत को धमकी दी यदि वह विश्व व्यापार संगठन के अनुरूप कार्यवाही नही करेगा तो उसके खिलाफ मिकी केनटोर की 1994 की रिपोर्ट के अन्तर्गत सुपर 301 एवं स्पेशल 301 के अन्तर्गत कार्यवाही की जा सकती है। परमाणु अप्रसार संधि (एन.पी.टी.) एवं व्यापक परमाणु परीक्षण प्रतिबन्ध संधि (1996) को

2015, RHIMRJ, All Rights Reserved ISSN: 2349-7637 (Online)

लेकर अमेरिका भारत पर हस्ताक्षर हेतु लगातार दबाव बना रहा था। अतः दोनों के इस मुद्धे को लेकर कटुता आना स्वाभाविक था।

भारत में 11वीं लोकसभा चुनावों में श्री एच.डी. देवगौड़ा भारत के प्रधानमंत्री बने। इनके समय में अमेरिका से बेहतर संबंध बनाने का प्रयास तो हुआ परन्तु एनपीटी व सीटीबीटी के प्रारूप को अस्वीकार भी किया गया। भारत ने अपना मत स्पष्ट कर दिया कि संधि के वर्तमान स्वरूप पर हस्ताक्षर नहीं करेगा।

अप्रेल 1997 में इन्द्र कुमार गुजराल भारत के प्रधानमंत्री बने और जून 1997 में दोनो मध्य महत्वपूर्ण प्रत्यर्पण संधि पर हस्ताक्षर किये गये। सितम्बर 1997 में गुजराल व अमेरिकी राष्ट्रपति बिल क्लिंटन के मध्य न्यूयार्क में वार्ता हुई। दोनों ने आर्थिक एवं व्यापारिक संबधों में तीव्र बढ़ोतरी तथा परमाणु निशस्त्रीकरण के लिए साझा कार्यक्रम बनाने की संभावना पर भी विचार करने का निर्णय किया।[3]

श्री अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन की सरकार बनी। वाजपेयी सरकार की परमाणु नीति से अमेरिकी सरकार चिन्तित था। जिसकी परवाह किये बिना वाजपेयी सरकार ने **11 व 13 मई 1998 को सफल परमाणु परीक्षण** कर आणविक शक्ति बनने के अपने अटल निर्णय को स्पष्ट किया। पोखरण में 24 वर्षों बाद किये गये परमाणु परीक्षण से भारत–अमेरिका सम्बन्ध तनावपूर्ण/मतभेदपूर्ण हो गये। जिसके फलस्वरूप अमेरिकी राष्ट्रपति क्लिंटन ने कठोर प्रतिबंध लगा दिये तथा अमेरिका ने पी–5 तथा जी–8 की बैठकों में परीक्षणों की आलोचना करने की पहल की।

अमेरिका द्वारा भारत पर कठोर आर्थिक प्रतिबंध लगाये जिनमें विदेशी सहायता कानून के तहत विदेशी मदद स्थगित, भारत के लिए अन्तर्राष्ट्रीय वित्तिय संस्थानों से प्राप्त होने वाले 1.7 अरब डालर का ऋण स्थगित, भारत को रक्षा उपकरणों और सेवाओं की आपूर्ति स्थगित कर दी गयी आदि। जिससे दोनों देशों के संबंध पुनः शीतयुद्ध काल जैसी स्थिति में पहुँच गये।

प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजेपयी ने परमाणु परीक्षण के पश्चात् अमेरिका द्वारा लगाये गये प्रतिबंधो पर नाराजगी व्यक्त की और कहा भारत परमाणु हथियारों का प्रथम प्रयोग नहीं करेगा। इनका उपयोग केवल आत्मरक्षा में किया जायेगा। अपने पड़ौसी राष्ट्रों से होने वाले खतरों से अपनी सुरक्षा हेतु यह कदम उठाया जाना स्वाभाविक व आवश्यक था।

परमाणु परीक्षणों के बाद भारत–अमेरिका सम्बन्धों को सुधारने के लिये अमेरिका के उपविदेश सचिव स्ट्रोव हालबोट तथा भारत विदेश मंत्री जसवंत सिंह के बीच अनेक वार्ताए हुयी जिससे नये युग का सूत्रपात हुआ, जिससे परिणामस्वरूप ही अमेरिका आर्थिक प्रतिबन्धों में छूट दी और आगे चलकर उनको लगभग हटा लिया गया।

भारत में आर्थिक उदारीकरण की प्रक्रिया नरसिंह राव सरकार ने 1991 में तीव्र गति से आरम्भ की थी। अमेरिका ने इस प्रक्रिया का स्वागत किया और यह आशा व्यक्त की गई कि आर्थिक सहयोग के द्वारा भारत और अमेरिका एक दूसरे के निकट आएँगे। भारत में अमेरिका क्षेत्र के पूंजी निवेश में तेजी से वृद्धि हई। अमेरिका पहले ही भारत का सबसे बडा व्यापार–भागीदार था। उसके साथ भारत के व्यापार में 1995 में 12 प्रतिशत की वृद्धि हो गई। जहाँ तक पूँजी निवेश का प्रश्न है, अकेले एक वर्ष (1995) में, पिछले चार दशकों के कुल अमरीकी पूँजी निवेश से अधिक की उपलब्धि हुई है। इस प्रकार भारतीय उद्योग में अमरीकी भागीदारी कई गुणा बढ़ गई।[4]

आज संसार में पारस्परिक निर्भरता के बढ़ते वातावरण में पूँजी निवेश के अधिक होने से आर्थिक विकास की अधिक दशाएँ उपलब्ध होंगी। अमरीकी वाणिज्य सचिव रोनल्ड ब्राऊन के अनुसार, दोनों देशों के लगभग 4 अरब डालर के व्यापार समझौते हो चुके थे, और 1995 में 16 अरब डालर के व्यापार के लिए बातचीत चल रही थी। कुछ लोगों का विचार है कि भारत को अमरीकी पूँजी की आवश्यकता है, न कि अमेरिका को अपनी पूँजी के भारत में निवेश की। परन्तु, वास्तव में व्यापार दोनों के लाभ के लिए किया जाता है। वाणिज्य सचिव ब्राऊन के शिष्टमंडल ने यह स्वीकार किया था कि उत्तर–शीत–युद्ध–काल में चीन नहीं, बल्कि भारत पूँजी निवेश की दृष्टि से प्रथम गन्तव्य हो गया था। क्लिन्टन प्रशासन ने भारत को 10 उभरते बाजारों में से एक स्वीकार कर लिया था।

अमेरिका की सरकार ने विश्व बैंक तथा अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष में भारत के लिए सहायता का जोरदार समर्थन किया। क्लिन्टन प्रशासन के दूसरे कार्यकाल में अमेरिका ने जोर देकर कहा कि वह भारत के साथ और भी अच्छे आर्थिक संबंधों के लिए कार्य करता रहेगा अमेरिका की विदेश मन्त्री श्रीमती मैड्लीन ऑल्ब्राइट ने 1997 में कहा कि भारत महत्त्वपूर्ण आर्थिक सुधार के मार्ग पर चल रहा था। "इसलिए क्लिन्टन प्रशासन भारत के साथ व्यापार और भारत में पूंजी निवेश को प्रोत्साहित करता रहेगा। अमरीकी विदेश विभाग के एक अधिकारी टॉमस पिकरिंग ने उत्साहपूर्वक स्वीकार किया कि भारत में, इस क्षेत्र के एक महत्त्वपूर्ण भागीदार बनने की सामर्थ्य है। परन्तु भारत के आकार और उसके महत्त्व को देखते हुए अमरीकी सहायता अभी भी पर्याप्त नहीं थी। कुलदीप नैयर ने **"रूठे हुए लोकतन्त्र"** शीर्षक के अधीन लिखते हुए कहा कि "यह अपेक्षा की जा सकती थी कि भारत के राजनीतिक लोकतन्त्र को आर्थिक रूप प्रदान करने के लिए अमेरिका मार्शल योजना जैसा कार्यक्रम प्रस्तुत करेगा। वाशिंगटन (अमेरिका) ने द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात् यूरोप के लिए ऐसा किया था कि युद्ध से जर्जरित लोकतान्त्रिक देशों को पुनः अपने पैरों पर खड़ा किया जा सके। वाशिंगटन (अमेरिका) के नीति–निर्धारकों ने कभी भी इस प्रकार का विचार प्रस्तुत नहीं किया।[5]

1998 में भारत द्वारा परमाणु परीक्षण के पश्चात् अमेरिका के द्वारा आलोचना और कई प्रकार के आर्थिक प्रतिबंध लगाये गये। भारतीय विदेश मंत्री श्री जसंवत सिंह और अमेरिकी विदेश सचिव स्ट्रोव ट्रोलबोट के बीच दस शिखर वार्ताओं के परिणामस्वरूप रिश्तों में बदलाव आय। तेजी से बदलते वैश्विक परिदृश्य में अमेरिका को यह अहसास होने लगा कि भारत की तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था एवं **आर्थिक उदारवादी नीति** से स्वयं को अलग नही रख सकता।

90 के दशक से गतिमान भारत अमेरिका संबंधों को बदलते आर्थिक व राजनीतिक परिदृश्य में 21वीं शताब्दी में वैश्विक समृद्धि व स्थिरता के संवर्धन की दिशा में आगे बढ़ते हुंए नया आयाम खोजना दोनों देशों का लक्ष्य है। इसी कड़ी में मार्च 2000 में अमेरिकी राष्ट्रपति श्री विलियम जे. क्लिंटन नए क्षितिज को खोजने भारत आए। इस यात्रा से भारत–अमेरिका संबंधों में एक नया मोड़ आया। अमेरिकी राष्ट्रपति की क्लिंटन ने भारतीय प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी के साथ एक **''दृष्टि मसौदे (विजन स्टेटमेंट)''** पर हस्ताक्षर करने के बाद स्वीकार किया हमसे संबंध राह भटक गये लेकिन हम दोनों देशों के बीच करीबी और गुणात्मक संबंध बनाने का दृढ़ निश्चय कर रहे हैं।[6]

राष्ट्रपति क्लिंटन जी इस यात्रा के दौरान उनके साथ आए प्रतिनिधि मंडल एवं भारतीय उच्च अधिकारियों के मध्य 15 समझौते पर हस्ताक्षर किये गये। अपनी इस यात्रा में आतंकवाद, व्यापक परमाणु परीक्षण निषेध संधि के विषय में विस्तार से बातचीत की गयी। राष्ट्रपति क्लिंटन की यात्रा के दौरान विजन पेपर जारी हुआ, उसमें निम्न बातें मुख्य है –[7]

1. स्वच्छ उर्जा एवं पर्यावरण पर एक संयुक्त परामर्शी समूह की स्थापना पर सहमति बनी।
2. अमेरिका भारत विजन और प्रौधोगिकी मंच की स्थापना पर सहमति बनी।
3. व्यापार से संबंधित भारत–अमेरिका कार्यदल के अन्तर्गत व्यापार नीति और सहयोग में अभिवृद्धि के लिए नियमित विचार–विमर्श हो।
4. आतंकवाद से मुकाबले के लिए संयुक्त कार्यदल की स्थापना की जाये।

राष्ट्रपति क्लिंटन की यह यात्रा पिछले सभी अमेरिकी राष्ट्रपतियों की यात्रा के मुकाबले ज्यादा गुणात्मक व सहयोगी रही। इस यात्रा के दौरान जहाँ अनेक महत्वपूर्ण मुद्धों पर सहमति बनी वही कई मुद्दों पर असहमति भी बनी रही। जैसे सीटीबीटी, प्रक्षेपास्त्र कार्यक्रम को स्थगित करना, परमाणु प्रसार संधि और परमाणु सामग्री के निर्यात पर रोक संबंधि मुद्दों पर कोई समझौता नहीं हो सका। निष्कर्षत अमेरिका के राष्ट्रपति की यह यात्रा विश्व में भारत के समुचित महत्व को स्थापित करती है।[8]

श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने दिसम्बर 2000 को अमेरिका की यात्रा पर गये। प्रधानमंत्री की यात्रा का प्रमुख उद्धेश्य आपसी संबंधों को मजबूत एवं बेहतर बनाना था। प्रधानमंत्री को अमेरिका की 106वीं संयुक्त बैठक को एक मात्र विदेशी राष्ट्राध्यक्ष द्वारा संबोधित करने का सम्मानित अवसर प्रदान किया गया। श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने अमेरिकी संसद को सम्बोधित करते हुए कहा कि चूंकि हम दोनों देशों के मूल्य और हित एक समान है, इसलिए हमें एक दूसरे का सहयोगी बनना ही होगा।[9]

इस यात्रा के द्वारा भारत अमेरिका संबंधों को अधिक सुदृढ़ और व्यापक आधार देने का प्रयास किया गया। प्रधानमंत्री वाजपेयी की यात्रा कहीं अधिक सार्थक, जीवंत एवं कही अधिक संभावनाओं से परिपूर्ण रही। दोनों नेताओं की यात्राओं ने शीतयुद्ध के उस जर्जर ढाँचे को ढहा दिया। श्री क्लिंटन ने कहा वाजपेयी की यह यात्रा सिर्फ दो नेताओं के सौहार्द ही नहीं है, दो राष्ट्रीय प्रवाहों के मिलन की प्रतीक भी है।[10]

अमेरिका में राष्ट्रपति बुश ने सत्ता में आते ही भारत के वैश्विक मामलों में बढ़ते महत्व को समझा और भारत के साथ सामरिक सहयोग की शुरूआत की। अक्टूबर 2001 में राष्ट्रपति बुश ने भारत के खिलाफ 1998 के परमाणु परीक्षणों के फलस्वरूप लगे अमेरिकी प्रतिबंधों का हटा दिया।

नवम्बर 2002 में भारत–अमेरिका ने **उच्च प्रौधोगिकी सहयोग समूह** की स्थापना पर सहमति बनी जिसके अन्तर्गत भारत को नागरिक एवं सैन्य तकनीकी को हस्तान्तरण करना, परमाणु और अन्तरिक्ष सहयोग को बढ़ावा देना था। सामरिक भागीदारी में जनवरी 2004 में एक घोषणा हुए जिसके अन्तर्गत अमेरिका भारत के साथ नागरिक परमाणु कार्यक्रम एवं उच्च तकनीकी व्यापार के सहयोग करेगा। दक्षिण एशियाई मामलों की अमेरिकी सहायक विदेश मेंत्री क्रिस्टीना रोक्का एवं भारत विदेश मंत्री जसवंत सिंह की अप्रेल 2002 नई दिल्ली में बैठक हुए जिसमें क्षेत्रीय सुरक्षा मुद्धों, आंतकवाद के खिलाफ युद्ध, साइबर आतंकवाद और सैन्य आदान–प्रदान के विभिन्न पक्षों पर बातचीत हुयी।

13 दिसम्बर 2001 को भारतीय संसद पर हुए आतंकवादी हमले को लेकर अमेरिका ने पाकिस्तान को खुली चेतावनी दी वही प्रधानमंत्री वाजपेयी ने 11 सितम्बर 2001 के अमेरिका पर हुए आतंकवादी हमले पर अमेरिका को विश्वास दिलाया कि आंतकवाद के अंत के लिए वह अमेरिका के साथ है। इसी कड़ी में जून 2003 में जी–8 शिखर वार्ता में वाजपेयी की राष्ट्रपति बुश से हुयी मुलाकात में विश्वास दिलाया कि भारत आंतकवाद के खिलाफ अन्तर्राष्ट्रीय प्रयासों में भारत अपना पूरा योगदान देगा। मार्च 2003 में ईराक पर अमेरिकी हमले को लेकर भारतीय संसद में निदां प्रस्ताव पारित किया गया। प्रस्ताव में कहा गया कि संयुक्त राष्ट्र की सहमति के बिना की गयी सैन्य कार्यवाही को स्वीकार्य नहीं किया जायेगा।[11]

जून 2003 को अमेरिकी राष्ट्रपति बुश प्रोटोकाल को तोड़ते हुए भारत के उपप्रधानमंत्री श्री लाल कृष्ण लाल आडवाणी से बातचीत करने पहुँचे। बुश की मुलाकात आडवाणी से हुयी इस अप्रत्याशित मुलाकात को भारत के बढ़ते राजनीतिक एवं बढ़ते कूटनीतिक महत्व के रूप में देखा गया।

निष्कर्षः– इस तरह भारत और अमेरिका के सम्बन्धों में शीत युद्ध काल व शीतयुद्धोतर काल एवं 21वीं शताब्दी के प्रारंम्भिक वर्षों में लगातार उतार–चढ़ाव आते रहे। जहाँ शीतयुद्ध काल में दोनों के संबंधों के संदेह, विश्वास की कमी रही। अमेरिका ने हमेशा भारत को सोवियत संघ के नजदीक पाया तथा भारतीय गुटनिरपेक्षता की नीति की आलोचना की। वही शीतोयुद्धोतर काल में वैश्वीकरण व उदारीकरण के दौर में जहाँ अमेरिका एक मात्र शक्ति था संबंधों में सुधार होने लगा। भारत एवं अमेरिका के मध्य आर्थिक एवं व्यापारिक सहयोग बढ़ा तथा मुक्त व्यापार में वृद्धि हुयी। परन्तु 1998 के परमाणु परीक्षण के पश्चात् पुनः संबंधों में टकराव मतभेद उत्पन्न हो गया। पुनः अमेरिकी राष्ट्रपति क्लिंटन की भारत यात्रा, अटल बिहारी की अमेरिकी यात्रा ने दोनों देशों के मध्य उत्पन्न मतभेदों का दूर करने में अहम योगदान दिया। फिर बुश ने राष्ट्रपति बनते ही भारत पर लगे सभी अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिबन्धों को समाप्त कर एक नये संबंधों की नीव डाली जो सुदृढ़ व सरल तथा आपसी मेलजोल से ओत–प्रोत थे। नयी 21वीं सदी में भारत अमेरिका के सम्बन्धों में सुधार के अनेक निर्णायक तत्व है जिनमें आर्थिक क्षेत्र, तकनीकी, आंतकवाद को समाप्त करना, सामरिक सहयोग, एक दूसरे के आर्थिक हित आदि शामिल है। जिससे आपसी सहयोग व हितो का आगे बढ़ाया जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. खन्ना वी.एन. : लिपाक्षी अरोड़ा, भारत की विदेश नीति, विकास पब्लिशिंग हाउस प्रा. लि. 2012, पृ. 342
2. डॉ. बी.एल. फडिया : अन्तर्राष्ट्रीय संबंध, साहित्य भवन आगरा, 2012, पृ. 355–357
3. प्रो. बी.एम.जैन : अन्तर्राष्ट्रीय संबंध, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, 2014, पृ. 279
4. महामात्र अनिल कुमार : अमेरिका के राजनीतिक नक्शे में भारत : ओबामा के राष्ट्रपति काल में शुरूआती कदम, वर्ल्ड फोकस, सितम्बर 2011, पृ. 57
5. वाउचर आर.ए. : द यूनाईटेड स्टेटस एण्ड साउथ एशिया इन एक्सपेंडिग एजेण्डा, 17 मई 2006
6. वार्षिक रिपोर्ट 2009–10, विदेश मंत्रालय, भारत सरकार
7. वार्षिक रिपोर्ट 2009–10, विदेश मंत्रालय, भारत सरकार
8. प्रो. बी.एम. जैन : अन्तर्राष्ट्रीय संबंध, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, 2011, पृ. 311
9. वार्षिक रिपोर्ट 2009–10, विदेश मंत्रालय, भारत सरकार
10. वार्षिक रिपोर्ट 2010–11, विदेश मंत्रालय, भारत सरकार
11. प्रो. मोहम्मद बदरूल आलम : भारत–अमेरिका संबंध की ऐतिहासिक समीक्षा, वर्ल्ड फोकस, अंक फरवरी 2015, पृ. 4

2015, RHIMRJ, All Rights Reserved

ISSN: 2349-7637 (Online)